© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 प्रमोद कुमार मिश्र
शोध–निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद, (उ0प्र0)
मीनू पाण्डेय
शोधछात्रा, नेट (शिक्षाशास्त्र),
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद, (उ0प्र0)

सारांश–प्रस्तुत अध्ययन का विषय उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन है। अध्ययन में लिंग के आधार पर उद्देश्यों का निर्माण कर अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने अध्ययन प्रक्रिया को एक्स–पोस्ट–फैक्टो अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रयागराज मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण को मापने के लिए तथा संज्योत पेठ, सुषमा चौधरी एवं उपेन्दर धर द्वारा निर्मित 'आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल (OCS)' तथा विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का मापन के लिए डॉ0 बी0के0 पासी द्वारा निर्मित 'पासी टेस्ट ऑफ क्रियेटिविटी' का प्रयोग किया गया है। जिसका निर्माण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों वर्जन का उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (एफ–अनुपात) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषणोपरान्त पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों एवं छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव पाया गया जबकि छात्राओं के सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं पाया गया। जिसका कारण यह हो सकता है कि आज भी बालिकाओं को परिवार, विद्यालय, समाज एवं अन्य जगहों पर रोका– टोका जाता है वहीं उन्हें बहुत कम अभिप्रेरित किया जाता है तथा उन्हें आगे बढ़ाने में लोगों की सोच आज भी पीछे हैं।

की–वर्ड– उच्च माध्यमिक स्तर, अंग्रेजी माध्यम, सृजनात्मकता, संस्थागत वातावरण

प्रस्तावना–

आज उसी बालक को प्रतिभाशाली कहा जाता है जिसमें उच्च बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ सृजनात्मक योग्यता होती है जो कि विज्ञान, कला, संगीत, नाटक आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हैं। इसीलिए आज प्रतिभाशाली छात्रों का चयन करते समय बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ सृजनात्मक योग्यता पर भी ध्यान दिया जाता है। आज स्कूलों और महाविद्यालयों पर बहुत बड़ा दोष लगाया जाता है, उनके द्वारा सृजनात्मक चिन्तन का हनन किया जा रहा है। पुस्तकीय ज्ञान दिया जाता है, शिक्षक चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी परम्परावादी, रूढ़िवादी व सिद्धान्तवादी ही रहें क्योंकि वे छात्रों द्वारा समस्याओं के असाधारण हल को पसन्द नहीं करते हैं। छात्रों को स्वयं अपने आप सोचे के नये व मौलिक विचार प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान नहीं किए जाते हैं, वे उन्हें पिटे पिटाये मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करते हैं। यदि कुछ छात्र नवीन ढंग से सोचते हैं, नवीन रूप से समस्या का समाधान करते हैं, अपनी पुस्तकों के विचारों की आलोचना करते हैं, शिक्षक के तार्किक प्रश्न पूछते हैं तो शिक्षक द्वारा उनकी आलोचना की जाती हैं। दण्ड दिया जाता है। अतः बच्चे सिद्धान्तवादी विचार करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, वाद–विवाद प्रतियोगिता निबन्ध, लेख आदि प्रतियोगिताओं में भी केवल भाषा को ही प्राथमिकता दी जाती है जिससे सृजनात्मक शक्तियाँ पूर्णतः दमित हो रही है। अतः आज हम सब को विचारधारा में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

माध्यमिक शिक्षा का संचालन करने वाली संस्थाओं के संस्थागत वातावरण का ज्ञान अति आवश्यक है। संस्थागत वातावरण को सम्पूर्ण संस्थागत पर्यावरण का एक पहलू समझा जाता है। संस्थागत वातावरण सम्पूर्ण संस्थागत पर्यावरण के केवल एक विशिष्ट आयाम की रचना करता है। वास्तव में यह संस्थागत पर्यावरण के केवल मनोवैज्ञानिक वातावरण को परिभाषित करता है जो भौतिक पर्यावरण से भिन्न होता है। विद्यालयों के भौतिक पर्यावरण में आशय विद्यालय की भौतिक वस्तुओं यथा विद्यालय भवन, आसन व्यवस्था, पठन–पाठन सामग्री आदि से है। जबकि संस्थागत वातावरण विद्यालय की एक संस्कृति होती है, पहचान होती है तथा उसके व्यक्तित्व को रेखांकित करती है। संस्थागत वातावरण शिक्षकों का शिक्षकों, प्रधानाध्यपकों से सम्बन्धों या अन्तःक्रियाओं की ओर इंगित करता है।

संस्थागत वातावरण कोलाहलपूर्ण या दक्ष, सरला से चलने वाली, शान्त एवं मानवीय, कठोर एवं उदासीन, बन्द या खुला आदि रूपों में से हो सकता है। संस्था का वातावरण लोगों को आकर्षित करने वाली, संरक्षण देने की प्रवृत्ति वाली तथा शान्त एवं मानवीय होना चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में इस तरह का वातावरण सृजित करना एक चुनौती है। आंकड़े भले ही बताते हो कि प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों का करोड़ों की संख्या में नामांकन हुआ है परन्तु यह प्राथमिक विद्यालय के वातावरण का आकर्षण न होकर निर्धन परिवारों का एकमात्र विकल्प है जो अर्थाभाव के कारण अन्यत्र अपने बालकों का दाखिला नहीं करा सकते हैं। संस्था के सदस्यों की उदासीनता उसके वातावरण को प्रभावित करती है यह तथ्य प्राथमिक विद्यालय के सन्दर्भ में शत्–प्रतिशत सही है जो उसे गैर सरकारी विद्यालयों से पृथक या निम्न कर देती है।

हॉलपिन ने कहा है – *संस्थागत वातावरण समूह तथा नेतृत्व के परस्पर अर्न्तसम्बन्धों का परिणाम है।*

विद्यालय का संस्थागत वातावरण शिक्षण की नैतिक कार्य सन्तुष्टिकरण, संस्था प्रधान की प्रभावशीलता, अनुदेशन नेतृत्व की गुणात्मकता एवं छात्रों की कार्य निष्पादन क्षमता और उपलब्धि से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित होता है।

जिस प्रकार प्रत्येक देश में अलग–अलग संस्कृतियाँ, नियम तथा कार्यशैली है उसी प्रकार प्रत्येक संगठन की अपनी अलग संस्कृति होती है जिसे उसका संस्थागत वातावरण कहा जाता है और यह वातावरण उक्त संस्था की पहचान होती है। फिर भी संस्था में सहयोग व स्नेह भावना से सदस्यों का आपसी जुड़ाव व अन्तःक्रिया समान होनी चाहिए। यह संस्था के वातावरण का महत्वपूर्ण कारक है। विद्यालय वातावरण का प्रभाव शिक्षकों की कार्यक्षमता, व्यवहार के साथ उक्त संगठन के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को भी प्रभावित करती है।

विद्यालयों का संस्थागत वातावरण शिक्षक के साथ–साथ बालकों के व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। यह तथ्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं के संदर्भ में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। चूँकि बालक का व्यक्तित्व व मन बहुत ही संवेदनशील होते हैं। अतः विद्यालयी वातावरण से बहुत तेजी से प्रभावित होते है। उनके सम्पूर्ण विकास के लिए बेहतर विद्यालयी वातावरण प्रदान करना अति आवश्यक है। सिर्फ साक्षरता को ही शिक्षा नहीं कहा जा सकता है शिक्षा एक व्यापक संप्रत्य है जैसा कि **महात्मा गाँधी** ने कहा है कि– *''साक्षरता को शिक्षा का अन्त नहीं कहा जा सकता और न ही प्रारम्भ कहा जा सकता है।''*

अतः शिक्षा का अर्थ सम्पूर्ण विकास से है इस सन्दर्भ में विद्यालयी वातावरण को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। संस्थागत वातावरण किसी भी संगठन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक पक्ष होता है। किसी भी संगठन की सफलता काफी सीमा तक उसके पर्यावरण पर निर्भर करता है। संस्थागत वातावरण ही संगठन में अच्छे ढंग से कार्य करने का महौल तथा कार्य संस्कृति तैयार करता है जो कालान्तर में संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। चूँकि प्राथमिक विद्यालयों के उद्देश्य दीर्घकालिक है इसलिए उनके वातावरण का ज्ञान महत्वपूर्ण हो जाता है जिससे उनमें सुधार किये जा सके तथा इन दीर्घकालिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। संस्थागत वातावरण को सामाजिक वातावरण, मानवीय वातावरण भी कहते हैं मानवीय एवं सामाजिक वातावरण से अभिप्राय संगठन में कार्यरत विभिन्न व्यक्तियों के मध्य संगठन के कार्य हेतु होने वाली अन्तःक्रिया के परिणाम के फलस्वरूप बने माहौल से होता है। संगठन में विभिन्न पदों पर कार्यरत व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के सम्पर्क में विभिन्न पदों पर कार्यरत व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं, वे एक दूसरे से विचार विमर्श करते हैं, मिलजुल कर कार्य करते हैं तथा एक दूसरे के कार्य में सहभागी बनते हैं, जिसके परिणामस्वरूप संगठन में एक प्रकार का सामाजिक वातावरण उत्पन्न हो जाता है। क्योंकि यह वातावरण व्यक्तियों की परस्पर अन्तःक्रिया का परिणाम होता है इसलिए इसे मानवीय वातावरण भी कहते हैं।

इस प्रकार माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण को शैक्षिक दृष्टि से प्रभावशाली, रोचक आकर्षक, सुखमय बनाने के लिए तथा शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि के साथ ही साथ प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संस्थागत वातावरण में परिचित होना आवश्यक है।

समस्या कथन–

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने अध्ययन प्रक्रिया को एक्स–पोस्ट–फैक्टो अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रयागराज मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण को मापने के लिए संज्योत पेठ, सुषमा चौधरी एवं उपेन्दर धर द्वारा निर्मित 'आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल (OCS)' तथा विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का मापन के लिए डॉ0 बी0के0 पासी द्वारा निर्मित 'पासी टेस्ट ऑफ क्रियेटिविटी' का प्रयोग किया गया

है। जिसका निर्माण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों वर्जन का उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (एफ–अनुपात) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

H_1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर है।

H_{01} उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 – 1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ–अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F-Ratio)	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	810.87	405.44	5.44*	F.01(2,297)=4.71
समूहों के अन्दर	297	22226.81	74.59		
कुल	**299**	**23037.68**	**480.02**		

*.01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 से दृष्टव्य होता है कि एफ–अनुपात का मान 5.44 हैं, जो .01 सार्थकता स्तर पर df =2, 297 पर सारणी मान 4.61 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विभिन्नता है।

सारणी सं0 – 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–मान

क्र. सं.	स्तर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थक / असार्थक
1.	उच्च	76	49.00	1.22	1.94	1.59	असार्थक
	मध्यम	148	47.06				
2.	उच्च	76	49.00	1.40	4.59	3.28	सार्थक
	निम्न	76	44.41				
3.	मध्यम	148	47.06	1.22	2.65	2.18	असार्थक
	निम्न	76	44.41				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निगमित टी–मान क्रमशः 1.59, 3.28 एवं 2.18 है। समूह तुलना से यह प्रतीत होता हैं कि उच्चतर संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से अधिक है। जबकि उच्चतर एवं मध्यवर्ती संस्थागत वातावरण तथा मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से समानता है। अतः उच्चतर एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है।

निष्कर्षतः उच्चतर एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है तथा अर्थात् संस्थागत वातावरण का विद्यार्थियों के सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

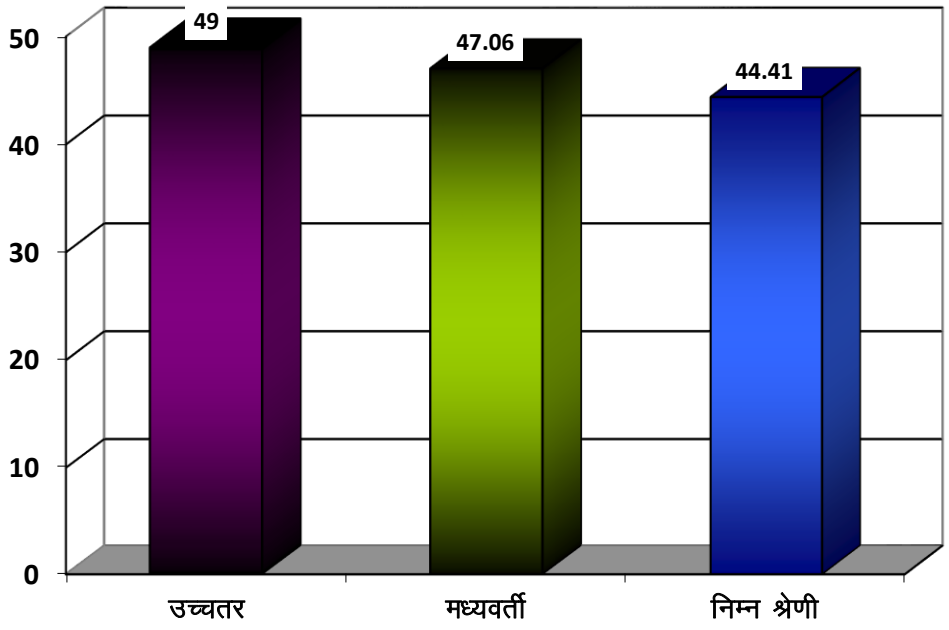

आरेखीय प्रदर्शन–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमान

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

H_2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर है।

H_{02} उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में नहीं अन्तर है।

सारणी सं0 – 2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ–अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F-Ratio)	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1186.96	593.48	18.69*	F.01(2,147)=4.75
समूहों के अन्दर	147	4700.78	31.76		
कुल	**149**	**5887.74**	**625.24**		

*.01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 से दृष्टव्य होता है कि एफ–अनुपात का मान 18.69 हैं, जो .01 सार्थकता स्तर पर df =2, 147 पर सारणी मान 4.75 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विभिन्नता है।

सारणी सं0 – 2.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–मान

क्र. सं.	स्तर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थक / असार्थक
1.	उच्च	39	56.62	1.12	3.79	3.39	**सार्थक**
	मध्यम	73	52.82				
2.	उच्च	39	56.62	1.28	7.85	6.11	**सार्थक**
	निम्न	38	48.76				
3.	मध्यम	73	52.82	1.13	4.06	3.60	**सार्थक**
	निम्न	38	48.76				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निगमित टी–मान क्रमशः 3.39, 6.11 एवं 3.60 है। समूह तुलना से यह प्रतीत होता हैं कि उच्चतर संस्थागत वातावरण

वाले छात्रों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। जबकि मध्यवर्ती संस्थागत वातावरण के छात्रों की सृजनात्मकता निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। अतः उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् तीनों में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षतः उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् संस्थागत वातावरण का छात्रों के सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

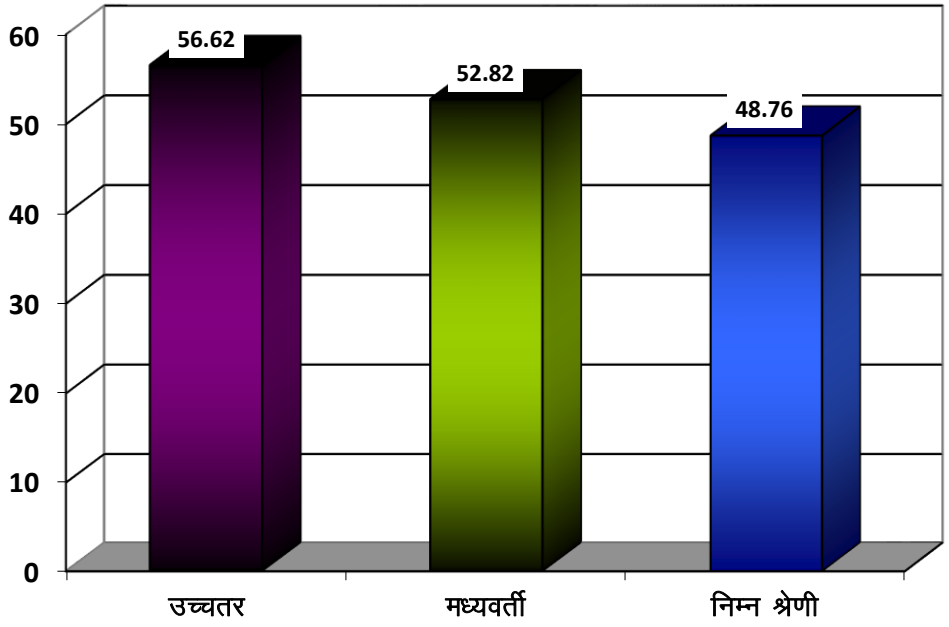

आरेखीय प्रदर्शन–2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमान

4.3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

H_3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाली छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर है।

H_{03} उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाली छात्राओं की सृजनात्मकता में नहीं है।

सारणी सं0 – 3

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाली छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ–अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F-Ratio)	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	57.25	28.62	0.64	F.01(2,147)=4.75
समूहों के अन्दर	147	6669.69	45.07		
कुल	**149**	**6726.94**	**73.69**		

.01 स्तर पर असार्थक

सारणी संख्या 3 से दृष्टव्य होता है कि एफ–अनुपात का मान 0.64 हैं, जो .01 सार्थकता स्तर पर df =2, 147 पर सारणी मान 4.75 से निम्नतम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाली छात्राओं की सृजनात्मकता में समानता है।

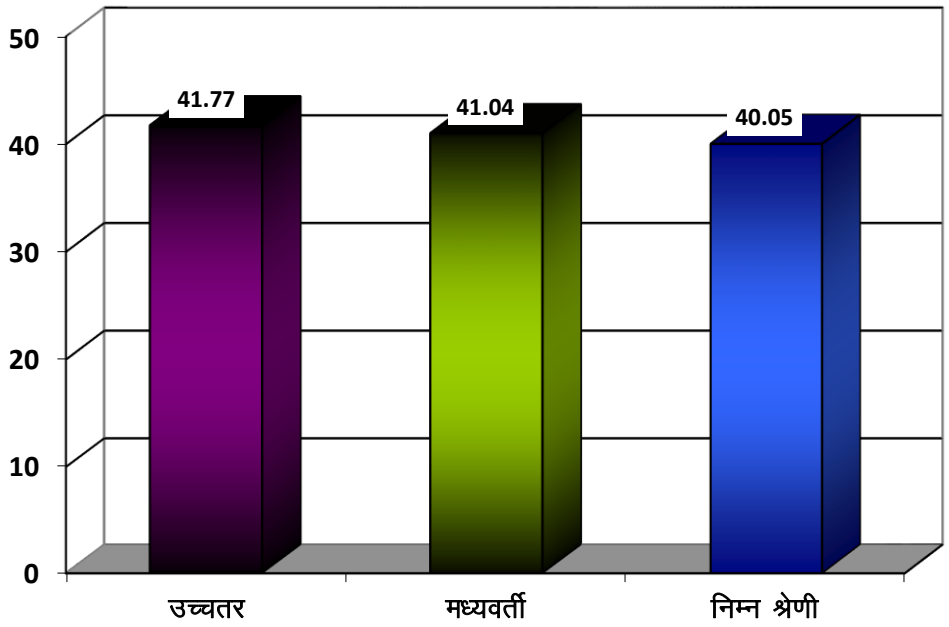

आरेखीय प्रदर्शन–3

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाली छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्यमान

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उच्चतर संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से अधिक है। मध्यवर्ती संस्थागत वातावरण के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से समानता है अर्थात् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सृजनात्मकता पर उच्च संस्थागत वातावरण का प्रभाव है।
- उच्चतर संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। मध्यवर्ती संस्थागत वातावरण के छात्रों की सृजनात्मकता निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता से समानता है। उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के सृजनात्मकता पर उच्च संस्थागत वातावरण का प्रभाव है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर सामाजिक–आर्थिक, मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के संस्थागत वातावरण वाली अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की सृजनात्मकता के सन्दर्भ में एक–दूसरे में समानता है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।

सुझाव–

क्लिमोविन, गिडरे एवं अन्य ने पाया कि– प्रायः छात्र एवं अध्यापक धैर्यपूर्वक कार्य नहीं करते, परन्तु यदि छात्रों को पर्याप्त समय दिया जाय तो छात्रों में अधिक सृजनात्मक व्यवहार उत्पन्न किया जा सकता है। यदि कक्षा–कक्ष में छात्रों के समक्ष खतरा मोल लेने की प्रवृत्ति के साथ कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाता तो यह उनके सृजनात्मक क्षमताओं में विकास में सहायक होता है। छात्रों के सीखने में सृजनात्मक क्षमता के वृद्धि के लिए यह बहुत आवश्यक है कि कक्षा–कक्ष का वातावरण खुला हुआ, मजाकियां एवं पूर्णतया स्वतंत्र होना चाहिए। **जेरे एवं अन्य (2010).** ने अध्ययन में सम्पादित किया और पाया कि– मुक्त संस्थागत वातावरण में सृजनात्मकता का स्तर अधिक पाया गया जबकि बन्द संस्थागत वातावरण में सृजनात्मकता का स्तर कम पाया गया। वर्तमान में शिक्षा, बच्चों को सृजनात्मकता प्रदान करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। जहाँ केवल पाठ्य–पुस्तकों की पढ़ाई होती है वहीं आज कला, नृत्य, गायन, अभिनय, खेल, विज्ञान, इंजीनियरिंग, डॉक्टरी इत्यादि क्षेत्रों में आज बढ़ती हुई

प्रतियोगिता में ने सृजनात्मकता ने एक अपना अलग स्थान ले लिया है जिसमें सृजनात्मकता अधिक है वह उतना ही आगे है और प्रतियोगिता में अव्वल आने में अपने प्रतिद्वन्द्वी से आगे बढ़ता जा रहा है। वहीं शिक्षा में भी सृजनात्मकता अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका है जिस विद्यार्थी में सृजनात्मकता अधिक है एवं अपने सृजन क्षमता से प्रश्नों को अच्छे ढंग से उत्तर प्रस्तुत कर रहा है वह उतना ही आगे बढ़ता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- जेरे, ए. (2007). द इन्वेस्टीगेशन बिट्विन द आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट एण्ड प्रोड्क्टविटी ऑफ स्टॉफ इन पब्लिक हास्पिटल ऑफ शाहिद बेशटी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल सांइसेस, एम.ए. *थीथिस इन मैनेजमेन्ट ऑफ हेल्थ सर्विसेस,* इस्लामिक आजाद यूनिवर्सिटी, तेहरान।
- फ्रैक बी0 व होविगंटन, डेविड (1981). क्रियेटिविटी, इंटेलीजेस एंड पर्सन, कैलिफोर्निया, *सातांक्रूज एनुअल रिव्यू ऑफ साइकोलॉजी,* अंक 32 पृ0 439–476, ई0 आर0 आई0 सी0 बेव पोर्टल।
- बावा, एस0 (1996). ए स्टडी ऑफ क्रियेटिविटि एडं ऐकेडेमिक एचीवमेंट, *साइकोलिंग्वा,* वाल्यूम 25 (182). पृ0 133–136
- मैकाबे, मैरिटा पी0 (1991). इन्फ्लूऐंस ऑफ क्रियेटिविटी एंड इंटलीजेंस ऑन एकेडंमिक परफार्मेंस, *जर्नल ऑफ क्रियेटिव बिहैवियर,* अंक 25 (2). पृ0 116–122, ई0 आर0 आई0 सी0 वेब पोर्टल।
- मैकलीलेन, आर. एण्ड निकोल, बी. (2008). द इम्पार्टेन्स ऑफ क्लासरूम क्लाइमेट इन फास्टरिंग स्टूडेन्ट्स क्रिएटिविटी इन डिजाइन एण्ड टेक्नोलॉजी लेशन, पेपर पर्जेन्टेड इन कॉर्न्फेन्स, *Loughborogh University*, http://dspace.lhova.ac.uk/12124/
- रामनिवास एवं नौटियाल, ए0के0 (2017). बी0एड0 छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन, *इन्टरनेशनल जर्नल आफ रिसर्च ग्रंथालय,* वैल्यूम–5 (7)।
- वेजेन, गजाथीश्वरी एवं अन्य (2016). स्कूल क्रिएटिव क्लाइमेट : फैक्टर्स इन्फ्लुऐशन्स पोस्टिंग क्रिएटिविटी स्कूल, *इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड ट्रेनिंग,* वाल्यूम–2, http://www.injet.upm. edu.my.